डाक - एक्सप्रेस

सत्यमेव जयते

भारतीय डाक
डाक सेवा-जन सेवा
India Post
Dak Sewa-Jan Sewa

डाक - एक्सप्रेस

संस्करण अप्रैल-2025

मुख्य पोस्टमास्टर जनरल मध्यप्रदेश परिमंडल भोपाल-462012

भारतीय डाक
डाक सेवा-जन सेवा
India Post
Dak Sewa-Jan Sewa

शुभकामना संदेश

विनीत माथुर
मुख्य पोस्टमास्टर जनरल,
मध्यप्रदेश डाक परिमंडल, भोपाल–462012

भोपाल दिनांक 22 अप्रैल, 2025

मध्यप्रदेश डाक परिमंडल के मुख्य पोस्टमास्टर जनरल के रूप मे आपसे संवाद करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। पत्रिका के इस तृतीय अंक में एक ओर जहाँ कर्मचारियों एवं उनके परिवार के सदस्यों द्वारा विभिन्न विषयों पर प्रेषित रचनाओं, लेख, चित्रकारी आदि को शामिल किया गया है वहीं दूसरी ओर परिमंडल की विभिन्न गतिविधियों को भी दर्शाया गया है जिससे कर्मचारियो को विभागीय क्रियाकलापों की जानकारी मिल रही है जो कि सचमुच सराहनीय है।

मै यह समझता हूँ कि यह पत्रिका कर्मचारियों की रचनात्मक प्रतिभा को न केवल उजागर कर रही है बल्कि उन्हे लेखन एवं पठन के लिए प्रेरित भी कर रही है साथ ही उनकी बौद्धिक क्षमता का विकास भी कर रही है।

आज का युग डिजिटलीकरण का युग है। विभाग में भी फाइलों का डिजिटलीकरण किया जा रहा है। ऐसे में आप सभी को अपने आप को तकनीकी रूप से उन्नत करना होगा एवं प्रशिक्षित करना होगा । मुझे विश्वास है कि परिमंडल में सभी कर्मचारी अपनी फाइले अब ई –ऑफिस के माध्यम से प्रस्तुत कर रहे होंगे।

इस पत्रिका के प्रकाशन में प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से योगदान देने वाले समस्त कर्मचारी एवं संपादक मण्डल बधाई के पात्र है। उनके इस प्रयास के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ...

विनीत माथुर

(विनीत माथुर)

शुभकामना संदेश

पवन कुमार डालमिया,
निदेशक डाक सेवाएं (मुख्यालय)
मध्यप्रदेश डाक परिमंडल, भोपाल–462012

भोपाल दिनांक 22 अप्रैल, 2025

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि ई–पत्रिका डाक एक्सप्रेस के तृतीय अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। इस पत्रिका के प्रकाशन से कर्मचारियों की रचनात्मकता को बढ़ावा मिल रहा है। उन्होने कविता और लेख के माध्यम से अपनी भावनाओं एवं विचारों को बहुत सुंदर ढंग से व्यक्त किया है जो अत्यंत प्रशंसनीय है।

मुझे पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख तथा कविताएं बहुत ही रोचक एवं ज्ञानवर्धक लगे। खासकर चित्रकारी तो बहुत ही आकर्षक लगी। इस पत्रिका के माध्यम से हमारे परिवार के सदस्य भी हमसे जुड़ रहे है, यह भी एक अच्छी शुरुआत है।

मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका भविष्य में विभागीय एवं ज्ञानवर्धक जानकारियों के नित नए अध्याय जोड़ेगी। मै पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए अपनी शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

(पवन कुमार डालमिया)

डाक - एक्सप्रेस
भारतीय डाक
डाक सेवा-जन सेवा
India Post
Dak Sewa-Jan Sewa

डाक-एक्सप्रेस

संस्करण अप्रैल-2025

मध्यप्रदेश डाक परिमडंल भोपाल

संयोजक : मुख्य पोस्टमास्टर जनरल कार्यालय, मध्यप्रदेश परिमंडल, भोपाल- 462012

पत्रिका परिवार

संरक्षक
श्री विनीत माथुर
मुख्य पोस्टमास्टर जनरल, मध्यप्रदेश परिमंडल, भोपाल

मार्गदर्शक/संयोजक
श्री पवन कुमार डालमिया
निदेशक डाक सेवाएं (मुख्यालय) मध्यप्रदेश परिमंडल, भोपाल

संपादक मंडल

श्री चन्द्रेश कुमार जैन
सहायक पोस्टमास्टर जनरल(लीगल/भवन एवं राजभाषा)
मध्यप्रदेश परिमंडल, भोपाल

श्रीमती अर्चना वर्मा
कनिष्ठ अनुवादक अधिकारी
परिमंडल कार्यालय, भोपाल

श्री संजय कुमार दुबे
कनिष्ठ अनुवादक अधिकारी
परिमंडल कार्यालय, भोपाल

श्री महेश कुमार प्रियानी
कनिष्ठ अनुवादक अधिकारी
परिमंडल कार्यालय, भोपाल

श्री संजय कुमार जैन
(संजय प्रिन्टर्स)
डिजाईनिंग एवं साज सज्जा

अनुक्रमणिका

1 लेख : मास्टर कॉपी
2 कविता : आज फिर एक नई कविता लिखना है
3 यात्रा वृतांत : सम्मेद शिखरजी
4 कविता : मुस्कान
5 लेख : MY EXPERIENCE INTRODUCING PHILATELY AND ITS HISTORY
6 कविता : नन्हा भारत मन
7 लेख : हिन्दी में टिप्पण आलेखन हेतु राजभाषा नगद पुरस्कार योजना
8 कविता : डाकघर
9 लेख : प्रेमचंद एक परिचय
10 कविता : हर हर माँ नर्मदे
11 प्रश्नोत्तरी : धार्मिक प्रश्नोत्तरी
12 कविता : कविता
13 लेख : जींव जन्तु और इंसान
14 कविता : थैले में भरकर डाकघर
15 कविता : डीलक्स गाड़ी
16 कलाकृति
17 झलकियां

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबधित लेखक के हैं । विभाग का उससे सहमत होना आवश्यक नहीं है ।

राजेश यादव
सिस्टम एड्मिनिस्ट्रेटर,
परिमंडल कार्यालय भोपाल

मास्टर कॉपी

हमारे बच्चे सब कुछ देख रहे हैं। हम उनसे जो भी कहते हैं, उसकी अपेक्षा वे इस बात से ज्यादा सीखते हैं, कि हम क्या करते हैं। नैतिकता पुस्तकों से कभी नहीं सीखी जाती, वह तो अपने आस–पास रहने वालों को देख–देखकर सीखी जाती है।
संसार आपके आचरण के उदाहरण पर चलेगा, न कि आपकी सलाह या उपदेश पर ।

यह एक तथ्य है कि जब कोई गुरु मौन को, शांति को प्राप्त कर लेता है, तब ध्यान लगाने का उसका ध्येय पूरा हो जाता है और फिर उसे वैसी साधना की जरूरत नहीं रह जाती। लेकिन अज्ञानी जिज्ञासु तर्क देता है, ''जब गुरु जी ही नियमित रूप से ध्यान नहीं लगाते तो मुझे नियमित होने की क्या जरूरत है?'' इसीलिए भगवद् गीता हमें याद दिलाती है –
''कोई महान व्यक्ति जो कुछ करता है, अन्य लोग उसका अनुकरण करते हैं। वह जो भी मानक स्थापित कर देता है. संसार उसी का अनुसरण करता है।'' दूसरों को उत्प्रेरित करने के लिए हमें कुछ तो प्रेरक कार्य करने ही चाहिए अपने तर्क –वितर्क एक ओर रखकर। हमें एक आदर्श बनने योग्य होना चाहिए। जो कर्तव्य है, उसे किया जाना चाहिए, और जो करने योग्य नहीं है, उसे करना बंद कर दिया जाना चाहिए।
एक शिक्षक, एक बॉस, एक अभिभावक, किसी उद्योग के प्रमुख, किसी परिवार के मुखिया, किसी सरकारी कार्यालय के पदाधिकारी किसी ऐसे या अन्य रूप में... आपको, मुझे, और हममें से हर एक को इस तरह से रहना और जीना चाहिए, जो दसूरों के अनुकरण व अनुसरण के योग्य मानक स्थापित कर सके। आपका सोचना, बोलना, कार्य करना और रहना ऐसा होना चाहिए जैसा कि आप दसूरों से चाहते हैं कि वे किस प्रकार बोलें, किस प्रकार कार्य करें और किस प्रकार रहें। जिस बात की अपेक्षा हम खुद से करने को इच्छुक नहीं हैं, तैयार नहीं हैं, उस बात की अपेक्षा हम संसार से कैसे कर सकते हैं ?

कुछ समय बाद आपके आस–पास का संसार आप ही की कार्बन कॉपी लगने लगता है। इसलिए यह सुनिश्चित कर लें कि आप ऐसी 'मास्टर कॉपी' बनें जो इस योग्य तो हो कि उसकी 'डुप्लीकेट कॉपी' बनाई जा सके।

दीपक कुमार अग्रवाल
डाक सहायक, कार्यालय पोस्टमास्टर जनरल
जबलपुर क्षेत्र, जबलपुर

आज फिर एक नई कविता लिखना है,

जो पहले न लिख पाया,
आज मुझे वो लिखना है,
उन जीवन के एहसासों को,
उन सच्ची सच्ची बातों को,
उन अनसुलझी फरियादों को,
उन धुंधले पड़ गए ख्वाबों को,
आज मुझे सब लिखना है,
हाँ, आज मुझे सब लिखना है.....

उन बचपन की सब यादों को,
उन पहले प्यार की बातों को,
उन कसमों को, उन वादों को,
आज मुझे सब लिखना है,
हाँ, आज मुझे सब लिखना है.....

उन तपिश भारी सब रातों को,
उन संघर्षो की यादों को,
खाली जेब और भूखे पेट,
उन कड़वे सच हालातों को,
आज मुझे सब लिखना है,
हाँ, आज मुझे सब लिखना है.....

उन सफलता की राहों को,
उन पूरे हुए ख्वाबों को,
पर बलिदानों को भी लिखना है.......
वो गिरवी रखी माँ की चुड़ी,
उस किस्से को भी लिखना है.....
उस किस्से को भी लिखना है.....
आज मुझे सब लिखना है,
हाँ ,आज मुझे सब लिखना है

चारू जैन
डाक सहायक (एम.एम.यू अनुभाग)
परिमंडल कार्यालय, भोपाल

यात्रा वृत्तांत सम्मेद शिखर जी

जैन धर्म में सम्मेद शिखरजी की यात्रा का बहुत महत्व है । इसे जैन धर्मावलंबियों के लिए सबसे महत्वपूर्ण यात्राओ में से एक माना जाता है । सम्मेद शिखरजी की यात्रा को करने से आध्यात्मिक शुद्धि की प्राप्ति और भौतिक इच्छाओ से अलग होने और अपने भीतर की आत्मा से जुड़ने में सहायता मिलती है, अर्थात आत्मचिंतन के लिए सुखद अनुभव की प्राप्ति होती है ।

सम्मेद शिखरजी की यात्रा का सबसे आकर्षक पहलू है शिखर जी पर व्याप्त शांत और प्रकृति अनुकूल वातावरण। झारखड की हरी–भरी पहाड़ियों के बीच में बसा सम्मेद शिखरजी बाहरी दुनिया की अराजकता और शोर से दूर शांति और सुकून का वातावरण प्रदान करता है जिसमे व्यक्ति को अपने जीवन से जुड़े सुखद या दुखद अनुभव के लिए आत्मचिंतन करने का अवसर मिलता है ।

सम्मेद शिखरजी जहाँ से जैन धर्म के चौबीस तीर्थंकरो मे से बीस तीर्थंकर ने मोक्ष प्राप्त किया था । यहाँ पर्वत पर जैन धर्म के सभी 24 तीर्थंकर के चरण विधमान है जिनकी वंदना और पूजन प्रतिदिन की जाती है ।मेरे द्वारा वंदना में पर्वत पर पैदल यात्रा रात्रि में 3 बजे शुरु की गई जिसमे मुझे ऊपर मंदिरजी पर पहुँचने में 3.30 घंटे का समय लगा । सुबह 6.30 बजे में पर्वत के शिखर पर 9 किलोमीटर का रास्ता तय करना मेरे लिए यह एक अचीवमेंट था जो मैंने थोड़ी कठिनाईयों से पूरा किया । किन्तु इसमें जैसे ही हम यात्रा के लिए निकले रास्ते में पहाड़ पर चलते समय आसपास के सुन्दर परिदृश्य के लुहावने दृश्य दिखाई दिए जिसने प्रकृति की सुन्दरता और इस जगह की आध्यात्मिक उर्जा के साथ मिलकर विस्मय और श्रध्दा की भावना को और भी मजबूत किया ।

सम्मेद शिखरजी की शांति आत्म निरीक्षण ,ध्यान और आत्मचिंतन के लिए सही अनुकूल वातावरण प्रदान करती है , यह एक ऐसी जगह है जहाँ कोई मनुष्य अपनी दैनिक रोजमर्रा की जिन्दगी की व्यस्तताओ से दूर होकर अपनी आध्यात्मिक यात्रा पर ध्यान केन्द्रित कर सकता है , चाहे आप मौन में बैठना चाहे, ध्यान लगाना चाहे या बस प्रकृति की सुन्दरता में डूबना हो, सम्मेद शिखरजी की शांति आपको तरोताजा और आध्यात्मिक रूप से उत्साहित महसूस कराएगी ।

यह यात्रा व्यक्ति की शारीरिक और मानसिक सहनशक्ति की परीक्षा है 27 कि.मी. कुल पैदल यात्रा 9 कि.मी. की चढाई , 9 कि.मी. की विभिन्न पर्वत श्रंखलाओ पर 24 टोंको पर तीर्थंकर की चरण वंदना और अंतिम 9 कि.मी. नीचे पर्वत से उतरना है । सम्मेद शिखरजी की यात्रा व्यक्ति के सहनशक्ति की परीक्षा के साथ ही धैर्य, दृढ़ता और विनम्रता जैसे गुणों को विकसित करने का अवसर भी है । मुझे सम्मेद शिखरजी की एक वंदना करने में 10 से 12 घंटे का समय लगा ।

निशा मालाकार
कार्यालय सहायक
संभागीय कार्यालय इंदौर नगर संभाग

मुस्कान

मरते हुए को प्राण वायु देती मुस्कान ,
क्रोध में जलते हुए को शीतलता देती मुस्कान ।
अस्वस्थ को भी स्वस्थ कर दे ,
ऐसी चमत्कारी शक्ति रखती मुस्कान ।
अन्धकार में प्रकाश लाती मुस्कान ,
सकारात्मक ऊर्जा से भर देती मुस्कान ।
बच्चे , बूढ़े या हो जवान ,
सबको ऊर्जावान बनाती मुस्कान ।
निराशा में भी आशा भर देती ,
नफरत को भी प्रेम में बदल देती मुस्कान ।
दुःख चाहे कितना भी बड़ा हो ?
हर पीड़ा को हर लेती मुस्कान ।
कोई बाजार नहीं जहाँ इसका सौदा हो ,
सत्कर्म करने से मुफ्त में मिल जाती मुस्कान ।
कभी संघर्ष का विराम है , तो कभी योग है मुस्कान ।
मानवता का अनमोल गहना है मुस्कान ।
तो क्यों ना हम भी मुस्कुराएँ ?
तनाव भरे जीवन को मुस्कराहट से सजाएँ ।
मुस्कराहट कायम रखकर चेहरे पर,
जीवन के कुछ दिन और बढ़ाएं ।

Ishaan Dalmia
The Sanskar Valley School
Class:- 9th (F)

MY EXPERIENCE
INTRODUCING PHILATELY AND ITS HISTORY

On 27th March, I gave a presentation in my school on Philately. I have been pursuing this hobby since I was 8 years old. When I heard of an opportunity to present a new skill in my class, I thought I could introduce my classmates to the wonderful hobby of philately.

First, I familiarized them with the term, and the distinction between 'stamp collecting' and 'philately'. The term 'philately' refers to the study and collection of postage stamps. The term 'stamp collecting' refers to collecting stamps for their artistic or monetary value without regard for their history and other such aspects.
After that, I showed them a video introducing the **Penny Black**:

Then, I narrated the history of the first postage stamp, the Penny Black. It was introduced because of issues with the payment for postage in the 19th century. Postage for letters across Britain was very expensive and the system was such that the receiver had to pay for the postage, so they could reject a letter that arrives to them, leaving it undelivered and unpaid. This was a waste of the postal service's time. Further, the letter had to be sent back to the sender so that he could pay for it, requiring two trips for an undelivered letter.

To fix this issue, Sir Rowland Hill came up with the idea of the first postage stamp, which could be paid for in advance and was relatively inexpensive. This stamp had a picture of Queen Victoria,and the words 'ONE PENNY' below it.
One classmate asked "Why is the Penny Black called so?"
While the question may seem juvenile, it was actually an interesting question, the answer to which is that it is called the Penny Black as it is worth one penny and its background is black.

This was a revolutionary idea that changed the way the postal systems functioned. Later, postal administrations realized that they could commemorate events and put informative matter on stamps instead of just pictures of monarchs or leaders. A little while after that, people started to collect stamps. This encouraged postal administrations to issue stamps in greater quantity with more interesting and popular content on them.

Then, I showed them the different ways they could collect stamps, which were:
Topical (based on the stamp's content), like collection of stamps of Gandhi, or nature.

Country based, where one tries to acquire the stamps issued by a country in a specific time period.

Another way to collect is by **writing about your stamps**

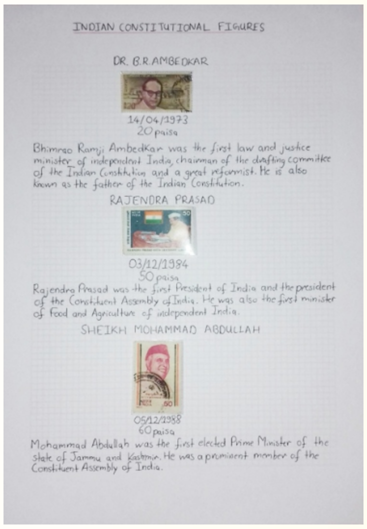

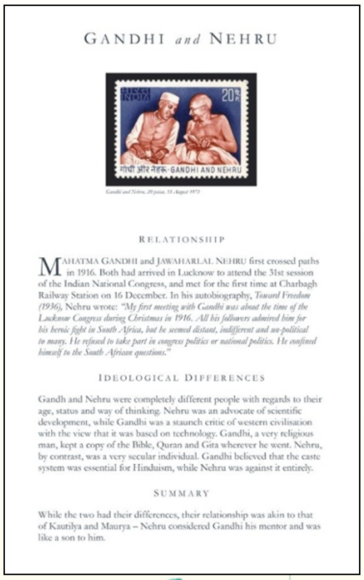

GANDHI *and* NEHRU

Gandhi and Nehru, 20 paise, 15 August 1973

RELATIONSHIP

MAHATMA GANDHI and JAWAHARLAL NEHRU first crossed paths in 1916. Both had arrived in Lucknow to attend the 31st session of the Indian National Congress, and met for the first time at Charbagh Railway Station on 16 December. In his autobiography, *Toward Freedom* (1936), Nehru wrote: *"My first meeting with Gandhi was about the time of the Lucknow Congress during Christmas in 1916. All his followers admired him for his heroic fight in South Africa, but he seemed distant, indifferent and un-political to many. He refused to take part in congress politics or national politics. He confined himself to the South African questions."*

IDEOLOGICAL DIFFERENCES

Gandh and Nehru were completely different people with regards to their age, status and way of thinking. Nehru was an advocate of scientific development, while Gandhi was a staunch critic of western civilisation with the view that it was based on technology. Gandhi, a very religious man, kept a copy of the Bible, Quran and Gita wherever he went. Nehru, by contrast, was a very secular individual. Gandhi believed that the caste system was essential for Hinduism, while Nehru was against it entirely.

SUMMARY

While the two had their differences, their relationship was akin to that of Kautilya and Maurya – Nehru considered Gandhi his mentor and was like a son to him.

I also introduced them to the concept of postcrossing (postcrossing.com), which is a website where one can send postcards to strangers internationally and receive beautiful postcards from different strangers. A teacher related the website to a system of pen pals, but I clarified that this is not the case with postcrossing as one does not have to send postcards to the same person, rather a different person each time. I have received each one of the unregistered postcards sent to me, showing the reliability of India Post and all of my postcards were received, and did not get damaged or lost even after travelling thousands of miles through various countries.

Finally, I gave them a sheet to teach them how to write about stamps and give them an incentive to try and pursue the hobby.

After the presentation, someone asked "How do you acquire stamps?"

I inherited a lot of my stamps, bought some, received some for free online and traded some as well.

The presentation was attended by a group of teachers as well. It was a wonderful experience and a great opportunity to spread the hobby and cultivate a new generation of philatelists.

Philately is not only a therapeutic hobby, but it is also a hobby where one can gain a large amount of knowledge of history and obtain actual historical artifacts.

राहुल कुमार बोपचे.
डाक सहायक, कार्यालय पोस्टमॉस्टर जनरल,
जबलपुर परिक्षेत्र, जबलपुर

नन्हा भारत मन

एक अमन का उजला भारत, कल देखा था सपनों में,
नहीं थी कोई जाति पाती, सब शामिल थे अपनों में,
नाच रहे थे आजादी पर, सब ढोलक की ढम ढम में,
क्या हिंदू क्या सिख ईसाई, सब हर्षित गाते मन में,
हरी फसल बेबाक पहाड़ी, थी समृद्धि हर कण में,
पेट भरे और पुलकित बालक, थी ममता हर एक मन में,

फिर जाने कुछ नीच अधम के, मन में क्या शैतान समाया,
हसते गाते भारत का, हर अंग लहू में डूब नहाया,
चाल चली क्या जाने ऐसी, आज तलक ना बूझी जाए,
बालक भूखा मां भी भूखी, हाथ की रोटी छीनी जाए,
जाति पाती और धर्म के, बेमतलब झगड़ों में उलझे,
भारत मां के आंसू भूले, पीड़ा सुलझाए ना सुलझे,
ऐसे रोते भारत का हिस्सा ना मुझको होना है,
थपका कर लोरी गा दे मां, मुझको वापस सोना है ।

हिन्दी में टिप्पण आलेखन हेतु राजभाषा नगद पुरस्कार योजना

राजभाषा विभाग भारत सरकार की राजभाषा नीति के अंतर्गत सरकारी कामकाज में टिप्पण आलेखन मूल रूप से हिन्दी में करने के लिए नकद पुरस्कार योजना वर्ष 1988 में लागू की गई थी जिसमें, एमटीएस कर्मचारियों को छोडकर, सभी अधिकारी/कर्मचारी भाग ले सकते हैं जो वर्ष में कम से कम 20,000 शब्द हिन्दी में लिखते है। यह योजना "ख" एवं "ग" क्षेत्र के कार्यालयों के लिए भी है, किन्तु "ग" क्षेत्र के मामले में शब्दों की संख्या 10,000 शब्द होगी।

जिन प्रतिभागियों की मातृभाषा तमिल, तेलुगू, कन्नड़, मलयालम, बांग्ला, उड़िया अथवा असमिया है उन्हें 20% तक अतिरिक्त अंकों का लाभ दिया जाता है ।

योजना में भाग लेने के लिए प्रतिभागियों को उनके द्वारा वर्ष भर में किए गए मौलिक कार्य का रिकार्ड रखना होगा। प्रतिभागी प्रतिदिन हिन्दी में लिखे गए कार्य का लेखा-जोखा रखेंगे और प्रत्येक सप्ताह के लेखे-जोखे पर नियंत्रक अधिकारी द्वारा सत्यापन कराने के पश्चात प्रतिहस्ताक्षर करेंगे।

योजना में भाग लेने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों को हिन्दी में किए गए कार्य का रिकार्ड निर्धारित प्रपत्र में रखना होता है, जो नीचे दिया गया है :-

क्र	दिनांक	कुल फाईलों / रजिस्टरों आदि की संख्या जिसमें हिन्दी में काम किया गया हो	हिन्दी में लिखे गए टिप्पण व आलेखन आदि की संख्या	हिन्दी में किए गए अन्य काम का संक्षिप्त ब्योरा	शब्दों की संख्या	अनुभागीय/ प्रभागीय प्रमुख के हस्ताक्षर, सप्ताह में एक बार
1	2	3	4	5	6	7

इस योजना को केंद्रीय सरकार के सभी मंत्रालय/संबद्ध और अधीनस्थ कार्यालय अपने अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए स्वतंत्र रूप से लागू कर सकते हैं।

इस योजना के तहत किए गए कार्य के मूल्यांकन हेतु कार्यालय अध्यक्ष की अध्यक्षता में में एक "मूल्यांकन समिति" का गठन किया जाता है। मूल्यांकन समिति में सहायक निदेशक राजभाषा एवं एक अन्य राजपत्रित अधिकारी सदस्य हो सकते हैं। तथापि विभिन्न संबंधित कार्यालयों में अधिकारियों की उपलब्धता के अनुसार समिति के गठन में परिवर्तन किया जा सकता है।

मूल्यांकन हेतु 100 अंक रखे जाते है जिनमें से 70 अंक हिन्दी में किए गए कार्य की मात्रा तथा 30 अंक विचारों की स्पष्टता एवं प्रस्तुतिकरण के लिए होते हैं।

इस योजना में भाग लेने वाले प्रतिभागियों को निम्नानुसार पुरस्कार दिए जाते हैं:-

1 पहला पुरस्कार 5000/-रुपए (प्रत्येक) कुल 02 पुरस्कार
2 दूसरा पुरस्कार 3000/-रुपए (प्रत्येक) कुल 03 पुरस्कार
3 तीसरा पुरस्कार 2000/-रुपए (प्रत्येक) कुल 05 पुरस्कार

एस एम सरस्वती दुबे
एम.टी.एस. परिमंडल कार्यालय भोपाल

डाकघर

डाकघर
शब्द सुनते हीं
स्मृतियों में उभर आता है
लाल रंग का
सिलेण्डरनुमा आकर
जिसमें होती है क्षीर–सागर सी ग्रहता
वह अपने भीतर समा लेता है
जीवन का अनंत सुख–दुःख–हर्ष–व्यापार

फिर एकाएक उभर आती है
गेरू रंग से रंगी शीलन भरी चाहर दीवारी
खाकी रंग, पसीने से लथ–पथ, साइकिल की टुन..टुन..
भारी आवाज में पुकारता
चिट्ठी आयी है...
ओ भैया! सन्देशा आया है...

और खत्म होता महीनों का इंतजार
प्रियतमा को प्रेमी का
बहन को भाई का
माँ–पिता को बेटे के सलामती का

पोस्टमास्टर के मुहर की हर–भारी भरकम आवाज में
किसी के सुबकने
किसी के खिलखिलाने,
किसी के दुलारने की
ध्वनियाँ कैद हो...

बेटे के पास चिठ्ठी में पहुँचता है
प्रेमिका का उल्हना
बेटे की किलकारी–
पापा कहने का अधूरा प्रयास
बहन की ढेर सारी माँगें
माँ–पिता का वात्सल्य और
चिरंजीवी का आशीर्वाद...
राह देखतीं उनकी आँखें

अर्चना वर्मा
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी
परिमंडल कार्यालय भोपाल

मुंशी प्रेमचंद एक परिचय

प्रेमचंद का जन्म 31 जुलाई 1980 को उत्तर प्रदेश के वाराणसी जिले के लमही गाँव में एक कायस्थ परिवार में हुआ था। उनकी माता का नाम आनन्दी देवी और पिता का नाम अजायब लाल था। मुंशी प्रेमचंद का वास्तविक नाम धनपत राय श्रीवास्तव था। वह हिन्दी और उर्दू के सर्वाधिक लोकप्रिय उपन्यासकार, कहानीकार एवं विचारक थे। आरंभ मे वे नवाबराय के नाम से उर्दू में लिखते थे। उन्होने सेवासदन, प्रेमाश्रम, रंगभूमि, निर्मला, गबन, कर्मभूमि, गोदान आदि लगभग डेढ़ दर्जन उपन्यास तथा कफन, पूस की रात, पंच परमेश्वर, बड़े घर की बेटी, बूढ़ी काकी, दो बैलों की कथा आदि तीन सौ से अधिक कहानियाँ लिखीं।1918 ई. में प्रकाशित सेवासदन प्रेमचंद का हिन्दी में प्रकाशित होने वाला पहला उपन्यास था। यह मूल रूप से 'बाजारे हुस्न' नाम से पहले उर्दू में लिखा गया था लेकिन इसका हिन्दी रूप 'सेवासदन' पहले प्रकाशित हुआ था।

प्रेमचंद की भाषा शैली सटीक और साधारण थी। उनकी भाषा शैली खड़ी बोली हिंदी थी । वह पहले उर्दू में अपने उपन्यास लिखते थे, मगर बाद में वह खड़ी हिंदी में लिखने लगे। प्रेमचंद की भाषा शैली रचनात्मक और व्यंग्यात्मक भी रही है। उन्होने हिन्दी समाचार पत्र जागरण एवं साहित्यिक पत्रिका हंस का संपादन और प्रकाशन भी किया। मरणोपरांत उनकी कहानियाँ 'मानसरोवर' नाम से 8 खंडों में प्रकाशित हुई।

भल्लु सिंह मीना
डाक सहायक, सीहोर एच.ओ.

हर हर माँ नर्मदे

मगरमछ पर करती जो सवार
भेड़ाघाट के संगमरमर मे करती कल कल धार
अमरकंटक मे गिरता जल,
बनाता कपिल धारा जल प्रपात

जबलपुर के भेड़ाघाट मे जलप्रपात,बनता धुंआधार
ओंकारेस्वर ,महेश्वर मे आशीष पाये
नर्मदेश्वर, मँडलेस्व ँ शंकर भगवान
माँ नर्मदे की स्तुति मे झुकता शीष बारंबार

जलधाराओ मे ऐसी पावन जल धार
नर्मदे नर्मदे कर करे ,आज प्रशंसा, सारा संसार
नतमस्तक हों उमड़े भक्तजन,
ऐसी माँ नर्मदे की शक्ति अपार

पापियों के पाप हरे, दुखियों का करे उद्धार
श्रद्धा से जो करे माँ नर्मदे का ध्यान,
नर्मदा माता करे ऐसे भक्तजनो का बेड़ापार

जो लगाये माँ नर्मदे मे डुबकी एक ही बार
हों जाता है, वह इस भवसागर से पार

बिना आसक्ति के करती है सबका कल्याण
ऐसी माँ नर्मदे के चरणों मे विनती बारंबार
माँ नर्मदे की महिमा का करे वर्णन वेद चार
माना माँ नर्मदे को देव कन्या,
ऐसा वर्णन किये वेदव्यास जो है विष्णु के अवतार

माँ नर्मदे प्रकट हुई अमरकंटक से,
पाये आशीष, स्वयं कृपा सागर शंकर भगवान
जिसका हों हर पाषाण शिवलिंग, बिना प्राण प्रतिष्ठा के
ऐसी माँ नर्मदे पर जीवन न्यौछावर
करने को तैयार है आज सारा संसार

जिसके दर्शन मात्र से हों सफल हर यज्ञ, अनुष्ठान
जिसकी भक्ति से प्रसन्न हों स्वयं कृपा सागर शंकर भगवान
जिसके स्पर्श मात्र से हर पाषाण ले ले शिवलिंग का आकार
जिसकी स्तुति से मिले भगवान ब्रह्मा निराकार
जो हर मानव के कर दे सपने को साकार
ऐसी माँ नर्मदे के चरणों मे झुकता मेरा शीश बारंबार

द्वारा : राजभाषा अनुभाग
परिमंडल कार्यालय भोपाल

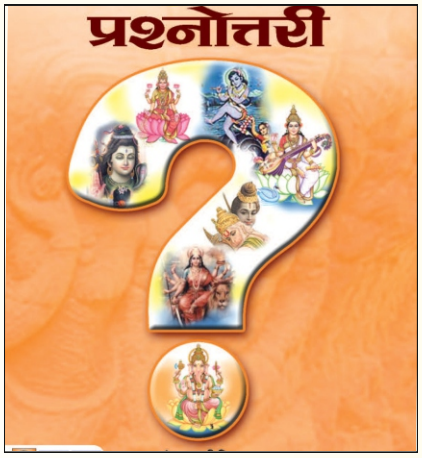

धार्मिक प्रश्नोत्तरी

प्रश्न.1.श्री कृष्ण के धनुष का क्या नाम था?
उत्तर – शारंग
प्रश्न.2. अर्जुन के धनुष का क्या नाम है?
उत्तर– गांडीव
प्रश्न.3. शिव के धनुष का क्या नाम था?
उत्तर– पिनाक
प्रश्न.4. राम का नामकरण किस ऋषि ने किया था?
उत्तर– वशिष्ठ
प्रश्न.5. कृष्ण के कुलगुरु कौन थे?
उत्तर– गर्गाचार्य
प्रश्न.6. कृष्ण के शिक्षा गुरु कौन थे?
उत्तर– महर्षि सांदीपनि
प्रश्न.7. संजय को दिव्य दृष्टि किसने प्रदान की थीं?
उत्तर– वेदव्यास जी ने
प्रश्न.8. शिखण्डी राजा किसके पुत्र थे?
उत्तर – द्रुपद के
प्रश्न.9.अर्जुन को गांडीव धनुष किसने दिया था?
उत्तर – वरुण देव ने
प्रश्न.10. अहिल्या किसकी पत्नी थीं?
उत्तर– महर्षि गौतम ऋषि की
प्रश्न.11. वेदव्यास के पिता का क्या नाम था ?
उत्तर– पराशर
प्रश्न.12. पांडवों के राज पुरोहित कौन थे?
उत्तर– धौम्य
प्रश्न.13. गुडाकेश किसका नाम था?
उत्तर– अर्जुन का
प्रश्न.14. महाभारत में ऋषि किंडम ने किसे श्राप दिया था?
उत्तर– पाण्डु को
प्रश्न.15. महाभारत में गृहस्थ आश्रम का वर्णन किसने किससे किया था?
उत्तर – शिव ने पार्वती से।

क्रमशः अगले अंक में ....

पारुल मेहरा
डाक सेवक सिंहपुर बड़ा
जिला नरसिंहपुर

कविता

मन के ये बोल बनी है कविता,
शब्द अलंकार धनी है कविता।
ज्ञान शिक्षा सह ये अनुभव देती,
ये सोच विचार सनी है कविता।।

आधार बना सीख दिया करती,
कम शब्दों में भार किया करती।
कह सकती हूं मैं धार कलम की,
काव्य सभा में शान लिया करती ।।

दर्पण बनती सच बोध कराती,
कविता ही ये नव शोध कराती ।
आशा से भर उम्मीद जगाती ,
ये भावों का अनुरोध कराती।।

शुभम प्रजापति,
छटांई सहायक
एस.आर.ओ.ग्वालियर

जीव जंतु और इंसान : –

वे कौन से गुण हैं जो इंसान को जानवर नहीं इंसान बना देते हैं? जानवर भी प्यार की भाषा समझते हैं हमारी तरह, उन्हें भी गुस्सा आता है। उन्हें भी भावनाएं जगती हैं, रोना जानते हैं, भावनाएं व्यक्त करना आप जानते हैं। जीव जंतु भी हमारी तरह बचपन में (साधारणतः) माता–पिता की देखरेख में रहते हैं (जीवन के लिए संघर्ष रहता है) तथा इसी तरह वृद्धावस्था में भी जीवन के लिए प्रकृति से संघर्ष चलते हैं। शरीर की ऊर्जा में कमी आने लगती है। इसी बीच जीव जंतु अथवा इंसान यौवन अवस्था में रहता है तो शरीर के अंदर पड़े रसायन, हारमोंस के पूर्णतः आश्रित रहता है। फिर बात चाहे मान, प्रतिष्ठा अर्जित करने की हो या वंश आगे बढ़ाने की। मानो प्रकृति के द्वारा निर्मित एक निश्चित पैटर्न को अपनाने के लिए सभी विवश हों। जैसे जंगल में शेर, गलियों में प्रायः आक्रामक कुत्ते साम्राज्यवादी सोच रखते हैं। अपने बच्चों का भजन पोषण हमारी तरह लगभग सभी जीव करते हैं फिर वह क्या है जो हमें जानवर नहीं इंसान बनाता है?

किसी कुत्ते को कंकर भी पड़ जाए तो वह गुस्सा व्यक्त करता है, थोड़ा दुलार करो तो वह भी दुम हिलने लगता है, अलग–अलग तरीके से प्यार जताता है। मानो एक निश्चित प्रकार के एक्शन का रिएक्शन क्या होना है यह पैटर्न पहले से ही नियत है। इसी तरह किसी इंसान के कंधे पर छिपकली गिर जाए तो साधारणतः होने वाला रिएक्शन पहले से ही नियत है। किसी टाइप के एक्शन पर कैसा रिएक्शन देना है, यह आसपास के वातावरण, घर समाज द्वारा जाने अनजाने इंसान, जीव जंतु सभी सीखते हैं और कुछ निश्चित प्रकार के ट्रिगर सेंटर्स निर्मित कर लेते हैं। जैसे किन बातों पर खुश होना है, किन बातों पर गुस्सा होना है आदि। इसी तरह इन्हीं एक्शन रिएक्शन के झूले पर सभी जीव–जंतु, इंसान बेहोशी में झूला झूलता रहता है। जब इतना सब समान है तो वह क्या है जो इंसान को जानवर नहीं इंसान बनाता है?

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, जिसे अस्तित्व के विकास के लिए समाज, सहयोग, संचार की जरूरत होती है। अस्तित्व को बनाए रखना जीवन को बरकरार रखने के डर को दर्शाता है और जान का डर तो जानवरों में भी होता है। मूलभूत आवश्यकताओं के लिए सभी प्रकृति का निर्भर हैं और सहयोग के लिए समाज, आसपास के माहौल पर। फिर इंसान भिन्न कैसे?

वह खास बात है सोचने की शक्ति, विश्लेषण करने का गुण (बुद्धि) किंतु शक्ति लाभकारी होगी या विनाशकारी यह तो नियंत्रणकर्ता की परिपक्वता पर निर्भर करता है। तो फिर सवाल उठता है कि क्या बुद्धि को गाइड करने वाला प्रशिक्षित है? कहीं बुद्धि स्वार्थ के केंद्र से संचालित तो नहीं?
क्या रिएक्शन से ऊपर उठकर रिस्पांस के बारे में भी सोचा जा सकता है? जहां उद्देश्य सिर्फ सामने वाले की भलाई, उसका हित हो। और अगर वाकई गाइड परिपक्व, प्रशिक्षित है तो जीवन में दुख क्यों है?

निलेश उच्चसरे
डाक सहायक–भोपाल जीपीओ,
भोपाल

थैले मे भरके डाकघर

थैले मे भरके डाकघर
जाये डाकिया घर–घर..
निकलवाना हो बैंक से पैसे,
या भिजवाना हो पार्सल,
करवाना हो जीवन बीमा,
या बुलवाना हो गंगाजल,
छोड़ो चिंता खुद आने की
सुविधा पहुचेंगी आप तक।
ले आया है डाकिया..
थैले मे भरके डाकघर..
जन–सुविधा को लेकर..
जाये डाकिया घर–घर..
थैले मे भरके डाकघर..
थैले मे भरके डाकघर

राजेश कुमार यादव
डाक सहायक
इंदौर नगर प्रधान डाकघर

डीलक्स गाड़ी

डीलक्स गाड़ी – डीलक्स गाड़ी
रंग बिरंगे रंग तुम्हारे
सबका मन ललचाती हो,
कटे–फटे टायरों पर चल कर
हजारो किलोमीटर की यात्रा तय कराती हो,
जर्जर–खस्ता सड़को पर चल–चल कर
अपना एवं यात्रीयों का भार सहन कराती हो,
मध्यप्रदेश से उत्तरप्रदेश की दूरी तय कराती हो,
मैनेजर कहते है डीलक्स गाड़ी– डीलक्स गाड़ी,
कंडक्टर कहते है सुपर डीलक्स–सुपर डीलक्स गाड़ी,
यह कहकर सब यात्रियों को बुलाते हो,
इतनी बात बता दो हम को इस डिपो से उस डिपो जाकर क्या कराती हो,
किन्तु हम यात्रियो को समय पर क्यों नहीं पहुँचाती हो,
आखिर डीलक्स गाड़ी रोडवेज की ''रोडवेज–रानी हो''।

कलाकृति

शिवांगी गुप्ता
आशुलिपिक,
परिमंडल कार्यालय, भोपाल

कलाकृति

आरती गेड़ा
डाक सहायक, बजट अनुभाग,
परिमंडल कार्यालय, भोपाल

कलाकृति

दुर्गेश कुमार डहरिया
एम.टी.एस.
आर.ओ. जबलपुर

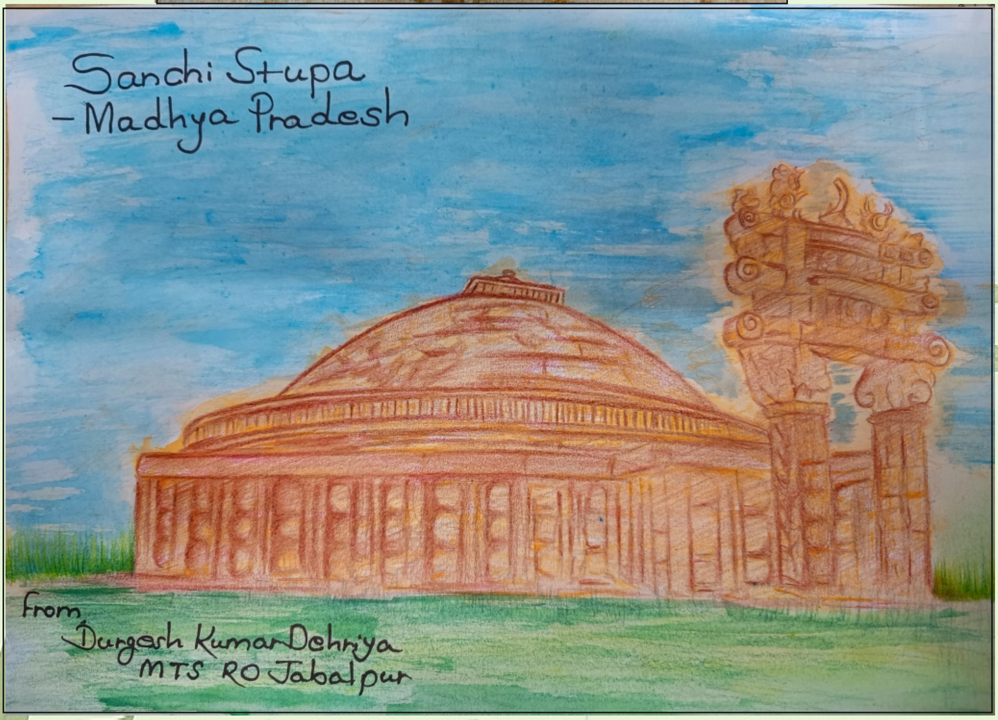

कलाकृति

आन्या अग्रवाल, कक्षा–IV
पुत्री श्रीमती शिल्पा अग्रवाल
परिमंडल कार्यालय भोपाल

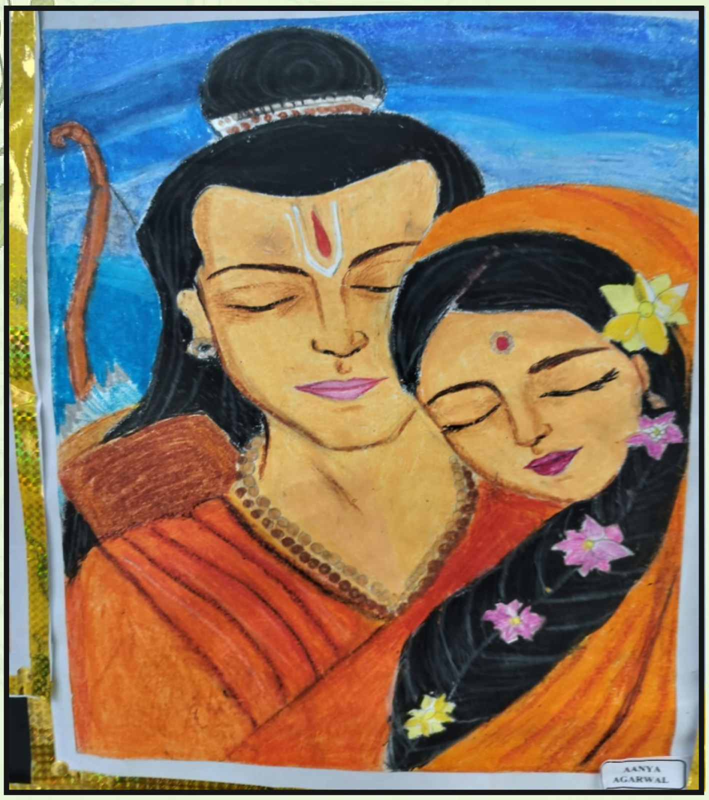

कलाकृति

गौरवजीत सिंह, कक्षा के.जी.–II
पुत्र श्रीमती वर्षा लिखार
कार्यालय डाक लेखा भोपाल

झलकियाँ

दिनांक 09.11.2024 को श्री विनीत माथुर, मुख्य पोस्टमास्टर जनरल महोदय द्वारा चम्बल संभाग, मुरैना में नवीनीकृत अटेर रोड़ भिंड उप डाकघर भवन का लोकार्पण किया गया।

झलकियाँ

दिनांक 13.11.2024 को जबलपुर परिक्षेत्र के अंतर्गत बालाघाट डाक संभाग में छपारा उपडाकघर के नवनिर्मित भवन का लोकार्पण श्री बृजेश कुमार, पोस्टमास्टर जनरल, जबलपुर परिक्षेत्र के कर–कमलों से संपन्न हुआ।

झलकियाँ

दिनांक 28.11.2024 को स्वच्छता पखवाड़ा के अंतर्गत डाक वस्तु भंडार, भोपाल में चलाए गए अभियान के फलस्वरूप स्वच्छ किए गए स्थान पर निर्मित बैडमिंटन कोर्ट का शुभारंभ आदरणीय मुख्य पोस्टमास्टर जनरल, म.प्र. परिमंडल द्वारा किया गया ।

झलकियाँ

दिनांक 02.12.2024 को भोपाल के मेजर ध्यानचंद हॉकी स्टेडियम में 36वीं अखिल भारतीय डाक हॉकी प्रतियोगिता का उद्घाटन मुख्य अतिथि सुश्री वंदिता कौल, सचिव (डाक) द्वारा किया गया । इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि श्री सैयद जलालुद्दीन रिजवी (पूर्व अंतर्राष्ट्रीय हॉकी खिलाड़ी), मुख्य पोस्टमास्टर जनरल म.प्र. परिमंडल, पोस्टमास्टर जनरल इंदौर परिक्षेत्र, महाप्रबंधक (वित्त), निदेशक डाक सेवाएँ(मुख्या. परिक्षेत्र), निदेशक डाक सेवाएँ (जबलपुर परिक्षेत्र), उपस्थित थे।

झलकियाँ

दिनांक 15.12.2024 को भारतीय डाक विभाग द्वारा ग्वालियर स्थित संगीत सम्राट तानसेन के समाधि स्थल पर "तानसेन समारोह शताब्दी वर्ष" पर स्मारक डाक टिकट जारी किया गया ।इस स्मारक डाक टिकट के विमोचन कार्यक्रम में श्री ज्योतिरादित्य मा. सिंधिया, माननीय संचार एवं उत्तर पूर्वी क्षेत्र विकास मंत्री, माननीय डॉ. श्री मोहन यादव, मुख्यमंत्री मध्यप्रदेश, श्री नरेंद्र सिंह तोमर, विधानसभा अध्यक्ष, श्री धर्मेन्द्र सिंह लोधी, मंत्री मध्यप्रदेश शासन, श्री तुलसीराम सिलावट, ग्वालियर प्रभारी मंत्री, श्री नारायणसिंह कुशवाह, मंत्री मध्यप्रदेश शासन एवं डाक विभाग से श्री ब्रजेश कुमार, मुख्य पोस्टमास्टर जनरल, म.प्र. परिमंडल, श्री पवन कुमार डालमिया, निदेशक डाक सेवाएं (मुख्या. परिक्षेत्र) भोपाल एवं अन्य अधिकारी उपस्थित थे ।

झलकियाँ

देवी अहिल्याबाई होलकर की 300वीं जन्म जयंती वर्ष के अवसर पर दो दिवसीय विशेष डाक प्रदर्शनी का शुभारंभ माननीय श्री तुलसी सिलावट, कैबिनेट मंत्री, म.प्र.शासन,श्री शंकर लालवानी, सांसद, इंदौर के करकमलो द्वारा किया गया ।

झलकियाँ

दिनांक 30.01.2025 को म.प्र. डाक परिमंडल कार्यालय, भोपाल में सम्भागीय प्रमुखों की व्यवसायिक समीक्षा बैठक एवं परिमंडल स्तरीय वार्षिक पुरुस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया । उक्त बैठक में मुख्य पोस्टमास्टर जनरल म. प्र. डाक परिमंडल, पोस्टमास्टर जनरल इंदौर परिक्षेत्र, महाप्रबंधक (वित्त), निदेशक डाक सेवाएँ(मुख्या. परिक्षेत्र), निदेशक डाक सेवाएँ (जबलपुर परिक्षेत्र), समस्त सम्भागीय प्रमुख एवं अन्य अधिकारी–कर्मचारी उपस्थित थे।

झलकियाँ

दिनांक 17.2.2025 को आर एस नगर Nodal Delivery Centre को नए भवन शाहपुरा में शिफ्ट कर एनडीसी शाहपुरा, भोपाल का शुभारंभ मुख्य अतिथि, श्री विनीत माथुर, मुख्य पोस्टमास्टर जनरल, मध्य प्रदेश परिमंडल के कर–कमलों से संपन्न हुआ।

झलकियाँ

दिनांक 24.02.2025 एवं 25.02.2025 को भोपाल के मानव संग्रहालय में आयोजित ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट में भारतीय डाक विभाग द्वारा दिनांक 24.02.2025 को डाक विभाग के विभिन्न उत्पादों की जानकारी एवं फिलेटली से संबंधित उत्पाद जैसे माय स्टाम्प तथा ancillaries के विक्रय हेतु स्टॉल लगाया गया तथा ग्लोबल इन्वेस्टमेंट समिट में पधारे अतिथियों को जानकारी प्रदान की गई ।

झलकियाँ

नारी शक्ति सप्ताह के उपलक्ष्य पर म.प्र. डाक परिमंडल में उत्कृष्ट कार्य करने वाली महिला डाक कर्मियों को सम्मानित किया गया ।

झलकियाँ

डाक महिला संगठन (CPLO) भोपाल द्वारा दिनांक 10.03.2025 को परिमंडल कार्यालय के डॉ. शंकर दयाल सभागार में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस 2025 के उपलक्ष्य में कार्यक्रम का आयोजन किया गया । कार्यक्रम में मुख्य पोस्टमास्टर जनरल म.प्र. डाक परिमंडल, निदेशक डाक सेवाएं (मुख्या. परिक्षेत्र), डाक महिला संगठन (CPLO) की अध्यक्ष श्रीमती मनीषा माथुर, उपाध्यक्ष श्रीमती निरुषा डालमिया, सचिव श्रीमती रीता गर्ग एवं अधिकारियों–कर्मचारियों के द्वारा परिमंडल कार्यालय की नारी शक्ति का अभिवादन किया गया।उक्त कार्यक्रम में नारी शक्ति सप्ताह के अवसर पर आयोजित प्रतियोगिता के विजेताओ एवं सफाई मित्र महिला को मुख्य पोस्टमास्टर जनरल म.प्र. डाक परिमंडल के द्वारा सम्मानित किया गया एवं डाक महिला संगठन (CPLO) भोपाल के सदस्यों के खोले गए अकाउंट की पासबुक वितरण एवं डाक–सेवा जन–सेवा पर एक नाटक का मंचन भी किया गया ।